उत्तर—समाज में भौतिक संस्कृति की वृद्धि तथा औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप समाज का स्तरीकरण रक्त की शुद्धता एवं जन्म के आधार पर न होकर सामाजिक स्थिति, राजनीतिक स्थिति एवं आर्थिक स्थिति के आधार पर या तीनों के सम्मिलित रूप से होता है। वर्ग व्यवस्था भी सामाजिक स्तरीकरण का एक प्रकार है। चूँकि वर्ग अर्जित पदों को महत्त्व देता है तथा इसमें मनुष्य अपनी योग्यता के आधार पर उच्च पद को ग्रहण कर सकता है और उच्च वर्ग का सदस्य हो सकता है। अतः यह व्यवस्था जाति के विपरीत खुली एवं लोचपूर्ण व्यवस्था है तथा इसमें परम्परागत कठोरता नहीं पाई जाती है।

कार्ल मार्क्स, मैक्स वेबर आदि विचारकों का मत है कि वर्ग मुख्यतः आर्थिक अन्तर पर आधारित हैं। कार्ल मार्क्स की मान्यता है कि प्राचीन युग से ही समाज आर्थिक आधार पर दो वर्गों में बँटा हुआ है। पहले जब कृषि युग था तब दो प्रमुख वर्ग थे—जमींदार तथा कृषक, सामन्त तथा दास, औद्योगीकरण के बाद पूँजीपति तथा श्रमिक। चाहे पूँजीपति वर्ग को लें अथवा जमींदार या सामन्त वर्ग को, इनके पास भौतिक सम्पन्नताएँ अधिक थीं। वे मालिक रहे हैं और कृषक, दास एवं श्रमिक वर्ग के लोग प्राचीन युग से ही अच्छी कोटि की सुविधाओं से वंचित रहे हैं। आखिर सामाजिक वर्ग क्या है? इसे हम इसके अर्थ एवं प्रमुख परिभाषाओं के आधार पर स्पष्ट कर सकते हैं।

Scanned with CamScanner

सामाजिक वर्ग का अर्थ एवं परिभाषाएँ
(Meaning and Definitions of Social Class)

सामाजिक वर्ग सामाजिक स्तरीकरण का ही एक स्वरूप है। यह मुख्यतः आर्थिक समानताओं एवं समान जीवन के अवसरों पर आधारित समूह है। अन्य शब्दों में, हम कह सकते है कि सामाजिक वर्ग व्यक्तियों का एक ऐसा समूह है जिसके सदस्यों की आर्थिक स्थिति एवं अन्य विशेषताएँ समान होती हैं तथा जिनके सदस्यों में अपने समूह के प्रति चेतना पाई जाती है। प्रमुख विद्वानों ने सामाजिक वर्ग की परिभाषाएँ निम्न प्रकार से दी हैं—

(1) **ऑगबर्न एवं निमकॉफ** (Ogburn and Nimkoff) के अनुसार—"एक निश्चित समाज में मुख्य रूप से एक ही पद वाले व्यक्तियों के समूह को सामाजिक वर्ग कहा जाता है।" [1]

(2) **जिसबर्ट** (Gisbert) के अनुसार—"एक सामाजिक वर्ग व्यक्तियों का समूह अथवा विशेष श्रेणी है, जिसका समाज में एक विशेष पद होता है। यह विशेष पद ही अन्य समूहों से उनके सम्बन्धों को स्थायी रूप से निर्धारित करता है।" [2]

(3) **मैकाइवर एवं पेज** (MacIver and Page) के अनुसार—"सामाजिक वर्ग एक समुदाय का वह भाग है जो सामाजिक स्थिति के आधार पर शेष भाग से पृथक् दृष्टिगोचर होता है।" [3]

(4) **लेपियर** (LaPiere) के अनुसार—"सामाजिक वर्ग एक सांस्कृतिक समूह है जिसे सम्पूर्ण जनसंख्या में एक विशिष्ट स्थिति या पद दिया जाता है।" [4]

(5) **बॉटोमोर** (Bottomore) के अनुसार—"सामाजिक वर्ग तथ्यतः कानूनी एवं धार्मिक रूप से परिभाषित एवं मान्य समूह होते हैं जोकि बन्द नहीं हैं अपितु खुले हैं। उनका आधार निर्विवाद रूप से आर्थिक है लेकिन वे आर्थिक समूहों से अधिक होते हैं।" [5]

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि सामाजिक वर्ग एक समान स्थिति वाले व्यक्तियों का एक समूह है। इससे अभिप्राय सामाजिक संस्तरण की उस मुक्त व्यवस्था से है जो योग्यता, शिक्षा तथा आर्थिक स्थिति पर आधारित हो सकती है।

वर्गों की संख्या के बारे में समाजशास्त्रियों में सहमति नहीं है। **मैरिल एवं एल्ड्रिज** (Merrill and Eldredge) ने छह प्रकार के वर्गों का उल्लेख किया है—

(1) सांस्कृतिक वर्ग;
(2) आर्थिक वर्ग;
(3) परिभाषित वर्ग;
(4) राजनीतिक वर्ग;
(5) स्वयं तादात्म्य वर्ग; तथा
(6) सम्मिलित वर्ग।

Scanned with CamScanner

कार्ल मार्क्स (Karl Marx) ने दो वर्गों का विवेचन किया है—
(1) पूँजीपति वर्ग (बुर्जुआ वर्ग), तथा
(2) मजदूर वर्ग (सर्वहारा)।

सामाजिक वर्ग की प्रमुख विशेषताएँ
(Major Characteristics of Social Class)

सामाजिक वर्ग की परिभाषाओं से इसकी अनेक मुख्य विशेषताएँ स्पष्ट होती हैं जो निम्नलिखित हैं—

(1) निश्चित संस्तरण (Definite hierarchy)—वर्ग व्यवस्था में व्यक्ति कुछ श्रेणियों में विभाजित होते हैं। यद्यपि वर्गों की संख्या के बारे में विद्वानों में सहमति नहीं है फिर भी यह निश्चित है कि कुछ वर्गों का स्थान ऊँचा और कुछ का नीचा होता है।

(2) वर्ग की सर्वव्यापकता (Universality of class)—वर्ग मानव समाज की एक सर्वव्यापी प्रघटना है। मार्क्स के अनुसार वर्ग व्यवस्था प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल में भी किसी-न-किसी रूप में सदैव विद्यमान रही है। यद्यपि इन्होंने वर्गविहीन समाज की कल्पना की थी, परन्तु अधिकांश विद्वान् वर्गविहीन समाज को केवल एक दिवास्वप्न मानते हैं क्योंकि मानव जीवन के इतिहास में इसकी उपलब्धि सम्भव नहीं है।

(3) वर्ग चेतना (Class consciousness)—वर्ग चेतना के कारण वर्ग-विशेष के सदस्यों में समानता की भावना प्रोत्साहित होती है व उस वर्ग को स्थायित्व प्राप्त होता है। कार्ल मार्क्स ने वर्ग चेतना को वर्ग के निर्माण की एक अनिवार्य विशेषता माना है क्योंकि केवल समान आर्थिक स्थिति ही वर्ग के निर्धारण में पर्याप्त नहीं है।

(4) अर्जित सदस्यता (Achieved membership)—वर्ग की सदस्यता जन्म द्वारा नहीं वरन् योग्यता और कुशलता द्वारा अर्जित होती है। व्यक्ति अपनी क्षमता एवं योग्यता से वर्ग की सदस्यता प्राप्त कर सकता है। एक व्यक्ति, जो निम्न वर्ग का सदस्य है, प्रयत्न करने से उच्च वर्ग का सदस्य बन सकता है। ठीक उसी प्रकार, एक उच्च वर्ग का सदस्य अपनी अयोग्यता के कारण निम्न वर्ग का सदस्य बन सकता है।

(5) मुक्त व्यवस्था (Open system)—वर्ग जाति के समान बन्द व्यवस्था न होकर मुक्त व्यवस्था है। किसी व्यक्ति का वर्ग उसकी परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित भी हो सकता है। इसी गतिशीलता के कारण इसे मुक्त व्यवस्था कहा गया है। प्रत्येक व्यक्ति को समान अवसर उपलब्ध है जिससे कि वह अपने गुणों, योग्यता तथा क्षमता के आधार पर उच्च वर्ग का सदस्य बन सके। उदाहरण के लिए—एक सामान्य श्रमिक अपनी मेहनत, लगन व योग्यता से उसी फैक्टरी का निदेशक तक बन सकता है जिसमें कि वह काम करता है।

(6) सीमित सामाजिक सम्बन्ध (Limited social relations)—प्रत्येक वर्ग के सदस्य अपने ही वर्ग के सदस्यों से सम्बन्ध रखते हैं। सामान्यतः उच्च वर्ग के सदस्य निम्न वर्ग के सदस्यों से सम्बन्ध स्थापित करने में सम्मान की हानि समझते हैं अर्थात् उनमें उच्चता की भावना (Superiority complex) होती है। ठीक इसके विपरीत, निम्न वर्ग के लोगों में निम्नता की भावना (Inferiority complex) होने के कारण, वे उच्च वर्ग के लोगों से मिलने या सम्बन्ध बढ़ाने में झिझक महसूस करते हैं। इसका यह अभिप्राय नहीं है कि वर्ग व्यवस्था में भी जाति की तरह अन्य समूहों के साथ रहने एवं खाने-पीने पर प्रतिबन्ध पाए जाते हैं। इसमें केवल अपने वर्ग के सदस्यों के साथ सम्पर्कों को प्राथमिकता दी जाती है।

Scanned with CamScanner

(7) **आर्थिक आधार** (Economic basis)—वर्ग निर्माण में आर्थिक आधार को ही प्रधानता दी जाती है। विशेषकर मार्क्स ने वर्ग निर्माण में आर्थिक आधार को प्रधानता दी है। सामान्यतः समाज तीन प्रमुख वर्गों में विभक्त होता है—(1) उच्च वर्ग, (2) मध्यम वर्ग तथा (3) निम्न वर्ग। इन वर्गों को पुनः तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—

उच्च वर्ग	मध्यम वर्ग	निम्न वर्ग
उच्च-उच्च वर्ग	उच्च-मध्यम वर्ग	उच्च-निम्न वर्ग
मध्यम-उच्च वर्ग	मध्यम-मध्यम वर्ग	मध्यम-निम्न वर्ग
निम्न-उच्च वर्ग	निम्न-मध्यम वर्ग	निम्न-निम्न वर्ग

(8) **सामान्य जीवन** (Normal life)—यद्यपि प्रत्येक वर्ग के सदस्य को किसी भी प्रकार के जीवन-यापन की स्वतन्त्रता होती है। फिर भी, वर्ग के सदस्यों से यह आशा की जाती है कि जिस प्रकार का वर्ग हो उसी के अनुरूप सदस्य जीवन-यापन करें। उच्च, मध्यम एवं निम्न, तीन वर्गों का एक विशिष्ट जीवन प्रतिमान होता है और उससे सम्बन्धित सदस्य उसे अपनाते हैं। इतना ही नहीं, एक वर्ग के सदस्यों के जीवन अवसरों में भी समानता पाई जाती है।

(9) **सामाजिक प्रस्थिति का निर्धारण** (Determination of social status)—वर्ग सामाजिक प्रस्थिति का निर्धारण करता है। व्यक्ति जिस वर्ग का सदस्य होता है उसी वर्ग के अनुरूप समाज में उसकी प्रस्थिति निर्धारित हो जाती है। परन्तु यह प्रस्थिति स्थायी नहीं है, क्योंकि मुक्त व्यवस्था होने के कारण स्वयं वर्ग की सदस्यता व्यक्ति की योग्यता के आधार पर परिवर्तित हो सकती है।

भारत में जाति एवं वर्ग का स्वरूप
(Nature of Caste and Class in India)

भारत गाँवों का देश है जिसमें कृषि व्यवसाय प्रमुख व्यवसाय है। ग्रामीण समाज को समझाने के लिए समाजशास्त्रियों ने एक ओर, जातियों के अध्ययन पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है तथा दूसरी ओर, वर्ग व्यवस्था के बारे में अनेक सामाजिक मानवशास्त्रियों तथा समाजशास्त्रियों ने अध्ययन किए हैं। **आन्द्रे बेतेई** (Andre Beteille)[1] का कहना है कि यद्यपि सामाजिक मानवशास्त्रियों ने भारतीय गाँवों में जाति को समझने के लिए हमारे ज्ञान में काफी वृद्धि की है, फिर भी इन समुदायों में वर्ग सम्बन्धों के अध्ययन में वे अधिक शर्मीले रहे हैं। वर्ग की तरफ कृषि-अर्थशास्त्रियों ने अधिक ध्यान केन्द्रित किया है तथा उन्होंने जाति को ऐतिहासिक उद्देश्य के विषय के रूप में देखने का प्रयास किया है।

जाति तथा वर्ग के विभिन्न अध्ययनों को **योगेन्द्र सिंह** (Yogendra Singh)[2] ने तीन तरह से समझाने का प्रयास किया है—

(अ) आधुनिक भारत में जाति तथा वर्ग की प्रकृति तथा वास्तविकता कैसी है ?

(ब) सामाजिक स्तरीकरण की व्यवस्था को परिवर्तित करने के लिए जाति तथा वर्ग में होने वाले परिवर्तन किस तरह से परस्पर सम्बन्धित हैं ?

(स) इनमें परिवर्तन सम्बन्धी प्रक्रियाओं का भारतीय समाज के आधुनिकीकरण में क्या योगदान है ?

Scanned with CamScanner

(अ) जाति तथा वर्ग की प्रकृति तथा वास्तविकता

(The Nature and Reality of Caste and Class)

जाति तथा वर्ग की प्रकृति की वास्तविकता को समझने के लिए तीन समस्याओं की तरफ ध्यान देना जरूरी है। ये हैं—

(1) क्या जाति सांस्कृतिक वास्तविकता है अथवा संरचनात्मक वास्तविकता ?

(2) क्या यह केवल अनुपम हिन्दू संस्था है अथवा पश्चिमी एवं पूर्वी अहिन्दू संस्कृतियों में भी पाई जाती है ?

(3) क्या जाति तथा वर्ग की एक ही सीमाएँ हैं अथवा जाति वर्ग को दबाए हुए है ?

एडमण्ड लीच (Edmund Leach) का कहना है कि जाति एक संरचनात्मक वास्तविकता है क्योंकि वह इसकी प्रकार्यात्मक व्याख्या देते हुए कहते हैं कि यह श्रम-विभाजन की व्यवस्था है जिसमें प्रतियोगिता नहीं पाई जाती। **एम० एन० श्रीनिवास, एफ० जी० बेली, गेराल्ड बेरेमन** भी जाति तथा वर्ग को संरचनात्मक वास्तविकता मानते हैं।

लुईस ड्यूमो (Louis Dumont) जाति को सांस्कृतिक वास्तविकता मानते हैं। इनका कहना है कि संस्तरण हिन्दू समाज की प्रमुख मान्यता है। आर्थिक तथा राजनीतिक सत्ता पर आधारित अधिकार वास्तव में पवित्रता-अपवित्रता की भावनाओं के अन्तर्गत ही आते हैं।

एडमण्ड लीच तथा लुईस ड्यूमों दोनों जाति को भारतीय संस्कृति की ही विशिष्ट संस्था मानते हैं, जबकि गेराल्ड बेरेमन का कहना है कि इसकी सांस्कृतिक तुलना सम्भव है।

जहाँ तक जाति तथा वर्ग की सीमाओं का सम्बन्ध है, लीच (Leach) का कहना है कि वर्ग समाजों में विशिष्टजन अल्पसंख्यक समूह हैं तथा बहुसंख्यक निम्न वर्गों के लोग विशिष्टजनों का समर्थन प्राप्त करने के लिए आपस में प्रतियोगिता में लगे हुए हैं। जाति में स्थिति इसके विपरीत है, क्योंकि प्रभु जातियों में निम्न जातियों के व्यक्तियों का समर्थन प्राप्त करने के लिए होड़ पाई जाती है। एम० एन० श्रीनिवास, आन्द्रे बेतेई आदि का कहना है कि जाति तथा वर्ग की संरचनात्मक विशेषताएँ इन सामाजिक प्रघटनाओं की खण्डात्मक प्रकृति के कारण पैदा होती हैं। योगेन्द्र सिंह का कहना है कि वर्ग वह खण्डात्मक स्तरीकरण है जिसमें विभिन्न स्तरों में प्रतियोगिता पाई जाती है, जबकि जाति में सहयोग पाया जाता है।

(ब) जाति तथा वर्ग में परिवर्तन

(Changes in Caste and Class)

जाति तथा वर्ग दोनों व्यवस्थाओं में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं जिन्हें सांस्कृतिक तथा संरचनात्मक स्तर पर देखा जा सकता है। सांस्कृतिक स्तर पर निम्न जातियों में परिवर्तन संस्कृतिकरण द्वारा हुए हैं, जबकि उच्च जातियों में परिवर्तन अधिकतर पश्चिमीकरण की प्रक्रिया द्वारा हुए हैं। पश्चिमीकरण से सांस्कृतिक असमानता कुछ समय के लिए आ जाती है। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् संस्कृतिकरण की प्रक्रिया कमजोर हो गई है तथा लम्बवत् गतिशीलता की बजाय समरेखीय गतिशीलता (Horizontal solidarity) आनी शुरू हो गई है। संरचनात्मक स्तर पर प्रभुता-सम्पन्न जातियों को निम्न जातियों ने संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में प्रतिमान माना है। एक ओर, संस्कृतिकरण निम्न जातियों को वृहत् प्रथाओं (Great traditions) को ग्रहण करने का अवसर देता है वहीं पर दूसरी ओर संस्तरण में भी परिवर्तन लाता है।

योगेन्द्र सिंह का कहना है कि संस्कृतिकरण तथा पश्चिमीकरण के अतिरिक्त भूमि-सुधारों, सामाजिक विधानों, प्रजातन्त्र, औद्योगीकरण तथा नगरीकरण से भी जाति तथा वर्ग व्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तन आए हैं। इनसे नई जाति संस्थाएँ उत्पन्न हुई हैं; जैसे—जातीय समितियाँ। कुछ

Scanned with CamScanner

...संस्थाएं सुदृढ़ हुई हैं तथा कुछ परिस्थितियों में नई तथा पुरानी संस्थाओं में संघर्ष की स्थिति ...हो गई है। इसका एक सबसे बड़ा परिणाम यह हुआ है कि विभिन्न जातीय खण्डों में वर्ग चेतना ...है तथा उद्देश्य अनुभव किए भी जाने लगे हैं तथा जनता द्वारा बताए जाने लगे हैं। वर्ग चेतना को ...के लिए आर्थिक असन्तुलन, जनसंख्यात्मक संरचना तथा प्रभुता-सम्पन्न जातियों के व्यवहार का ...योगदान रहा है।

जाति समितियाँ भी एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हैं क्योंकि वे उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन मात्र हैं, ...जाति परम्परागत रूप से सहयोग पर आधारित रही है। वर्ग चेतना जाति समितियों के कारण ...गई है तथा इस प्रकार सहयोग (जोकि जाति का प्रमुख आधार है) का स्थान प्रतियोगिता लेती जा रही है। इन जाति समितियों से वर्ग संरचना पैदा हो गई है।

(ञ) आधुनिकीकरण तथा परिवर्तन
(Modernization and Change)

जाति तथा वर्ग में होने वाले परिवर्तन किस सीमा तक आधुनिकीकरण तथा आर्थिक विकास ...है इसके बारे में दो भिन्न दृष्टिकोण हैं—प्रथम, जाति व्यवस्था तथा हिन्दू मूल्य आधुनिकीकरण तथा आर्थिक विकास में बाधाएँ हैं। **बेवर** (Weber) तथा **मर्डल** (Myrdal) इस दृष्टिकोण के समर्थक हैं। दूसरे दृष्टिकोण में पहले का खण्डन किया जाता है। **श्रीनिवास, कर्वे, मिल्टन सिंगर** तथा **एस० सी० दुबे** वेबर और मर्डल के विचारों का खण्डन करते हैं। **योगेन्द्र सिंह** का कहना है कि आधुनिकीकरण को मूल्यों की व्यवस्था के रूप में देखें तो जाति इसमें बाधा है, परन्तु अगर इसे भूमिका-संरचना (Role-structure) के सन्दर्भ में देखें, जोकि आधुनिकीकरण के लिए जरूरी है, तो जाति बाधा नहीं है। आधुनिकीकरण में उच्च जातियाँ शिक्षा, व्यवसाय, नेतृत्व तथा अन्य दृष्टियों से निम्न जातियों की अपेक्षा अधिक सहयोग दे सकती हैं।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि समकालीन भारतीय समाज में जाति में परिवर्तन तो हो रहे हैं परन्तु जाति का महत्त्व सामाजिक जीवन में पूरी तरह से समाप्त हो जाएगा, यह कहना कठिन है।

क्या भारत में जाति व्यवस्था वर्ग व्यवस्था में परिवर्तित हो रही है?
(Is Caste System Changing into Class System in India ?)

भारत में जाति व्यवस्था की प्रारम्भ से ही प्रधानता रही है। अंग्रेजी शासनकाल में होने वाले परिवर्तनों के परिणामस्वरूप तथा स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद उठाए गए अनेक कदमों से जाति व्यवस्था के स्वरूप में परिवर्तन हुआ है। परन्तु, क्या भारत में जाति व्यवस्था पश्चिमी समाजों में पाई जाने वाली वर्ग व्यवस्था में परिवर्तित हो रही है? इस प्रश्न का सम्बन्ध जाति एवं वर्ग की सीमाओं से है। जाति व्यवस्था समाज की ऐसी खण्डात्मक व्यवस्था है जिसके विभिन्न स्तरों (जातियों) में प्रकार्यात्मक रूप से सहयोग पाया जाता है। वर्ग व्यवस्था भी एक खण्डात्मक व्यवस्था है जिसके विभिन्न स्तरों (वर्गों) में प्रतियोगिता पाई जाती है। इन दोनों की सीमाओं से सम्बन्धित एक अन्य अन्तर (जैसा कि एडमण्ड लीच ने बताया है) यह है कि वर्ग समाजों में विशिष्ट जनसमूह अल्पसंख्यक समूह हैं तथा बहुसंख्यक निम्न वर्गों के लोग विशिष्टजनों का समर्थन पाने के लिए आपस में प्रतियोगिता में लगे हुए हैं। जाति व्यवस्था में इनके विपरीत बात पाई जाती है, क्योंकि प्रभु जातियों में निम्न जातियों के व्यक्तियों का समर्थन प्राप्त करने के लिए होड़ पाई जाती है।

क्या यह स्तरीकरण की दो विभिन्न व्यवस्थाएँ हमारे समाज में एक साथ पाई जाती हैं अथवा केवल एक ही पाई जाती है? इसके बारे में भी विद्वानों में अधिक सहमति नहीं है। बहुत-से विद्वानों

ने यह मत प्रकट किया है कि वर्ग व्यवस्था (**मार्क्स** के शब्दों में अगर वर्ग व्यवस्था को वर्ग चेतना की दृष्टि से देखा जाए) भारतीय समाज के सन्दर्भ में पाई ही नहीं जाती क्योंकि यहाँ प्रारम्भ से ही जाति व्यवस्था की प्रधानता रही है, जबकि **आन्द्रे बेतेई** (Andre Betcille) जैसे विद्वानों ने यह विचार प्रकट किया है कि वर्ग व्यवस्था भारतीय समाज में पाई जाती है। वास्तव में इनका विचार है कि समाजशास्त्री एवं सामाजिक मानवशास्त्री भारत में वर्ग व्यवस्था के अध्ययन में अधिक शर्मीले रहे हैं।

योगेन्द्र सिंह (Yogendra Singh) ने भारत में जाति एवं वर्ग के परस्पर सम्बन्धों की चर्चा करते हुए इस बात पर बल दिया है कि जाति तथा वर्ग एक ही बिन्दु पर मिलते (Coincide) हैं। इसका अर्थ यह है कि जाति और वर्ग आपस में पूर्ण रूप से जुड़े हुए हैं। अगर हम परम्परागत रूप से जाति व्यवस्था को देखें तो यह पाते हैं कि उच्च जाति के लोग सामान्यतः आर्थिक दृष्टि से भी उच्च थे (अर्थात् उच्च वर्ग के थे)। क्योंकि जाति व्यवस्था भारतीय समाज में एक सुदृढ़ व्यवस्था रही है, अतः इसने वर्ग व्यवस्था को अपने नीचे दबाए रखा है और उसे उभरने नहीं दिया है। लोगों की जागरूकता तथा वफादारी जाति के प्रति रही है, न कि वर्ग के प्रति।

अगर हम योगेन्द्र सिंह के दृष्टिकोण को स्वीकार कर लें तो इस प्रश्न का उत्तर देना सरल हो जाता है कि क्या भारतीय समाज में जाति वर्ग में परिवर्तित हो रही है ? जाति व्यवस्था में आज नगरीकरण, औद्योगीकरण, पश्चिमीकरण, संस्कृतिकरण, आधुनिकीकरण तथा शिक्षा, आवागमन एवं संचार के साधनों में विकास के कारण महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे हैं। इसकी कठोर निषेधात्मक प्रवृत्ति ढीली होती जा रही है। इसका परिणाम यह हुआ है कि वर्ग व्यवस्था, जिसे पहले जाति व्यवस्था अपने अन्दर समाए हुए थी, अब उससे पृथक् होने लगी है। साथ ही, आज जातियों में सहयोग (जोकि इस व्यवस्था की सबसे प्रमुख विशेषता रही है) समाप्त होता जा रहा है और इसका स्थान प्रतियोगिता (वर्ग व्यवस्था की विशेषता) लेती जा रही है। विभिन्न विद्वानों ने भारतीय समाज में पाए जाने वाले विभिन्न वर्गों (जैसे भू-स्वामी वर्ग, पूँजीपति वर्ग, श्रमिक वर्ग, काश्तकार वर्ग इत्यादि) का उल्लेख किया है। परन्तु क्या इस परिवर्तन के आधार पर ही हम यह कह सकते हैं कि जाति व्यवस्था आज हमारे समाज में समाप्त होती जा रही है और उसका स्थान वर्ग व्यवस्था लेती जा रही है ? शायद नहीं, क्योंकि वर्ग व्यवस्था हमारे समाज में उभर रही है, इसके बारे में कोई सन्देह नहीं है, परन्तु यह जाति व्यवस्था की समाप्ति का सूचक है, इसे स्वीकार करने में कठिनाइयाँ हैं। जाति व्यवस्था में यद्यपि अनेक संरचनात्मक एवं संस्थागत परिवर्तन हो रहे हैं, फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि यह व्यवस्था हमारे समाज में समाप्त होती जा रही है। अगर जाति व्यवस्था से सम्बन्धित सभी निषेध पूर्णतः समाप्त हो जाएँ और इसमें वर्ग व्यवस्था की तरह खुलापन आ जाए, तो हमें इस तर्क को स्वीकार करने में कोई कठिनाई नहीं होगी, परन्तु अभी ऐसा नहीं है, अतः अभी यह स्वीकार नहीं किया जा सकता कि भारत में जाति वर्ग में परिवर्तित हो रही है।

Scanned with CamScanner